उड़, चील, उड़!

लियोनार्डो और एक चील की कहानी

जॉन विंच

जियाकोमो उस दिन के लिए तरसता था जब वो अपने पिता की तरह एक कुशल पक्षी पकड़ने वाला बनेगा. लेकिन उसके पिता के विचार कुछ अलग थे.

उसके पिता ने कहा, "तुम पढ़ाई करो और विद्वान बनो. पक्षी पकड़ने वालों का जीवन बहुत कठिन होता है, और उस धंधे से रोज़ी-रोटी चलना मुश्किल होती है."

फिर एक सुबह महल से एक संदेश आया.

"राजकुमार को पूरे इटली की सबसे बेहतरीन लाल पूंछ वाली चील चाहिए," दूत ने कहा. "और उन्हें वो चील कल भोर तक चाहिए."

"मेरे पिता घर पर नहीं हैं. वो पक्षी पकड़ने गए हैं," जियाकोमो ने उत्तर दिया.

"तो बेहतर होगा कि तुम खुद ही जाकर एक चील को पकड़ो," उस दूत ने कहा.

यह जियाकोमो के लिए खुद को साबित करने का अच्छा मौका था. उसने अपने पिता के पुराने जालों और फंदों को इकट्ठा किया और वो जंगल की ओर चला.

सबसे पहले उसने उस घास के मैदान की तलाशी ली जो शहर से बिलकुल लगा हुआ था. लेकिन वहाँ उसे केवल कौवे ही मिले.

फिर वो नदी की ओर गया... लेकिन वहां उसे केवल बगुले ही मिले.

जियाकोमो ने चिड़ियों को फंसाने के लिए फंदे लगाए ...
लेकिन उन्होंने काम नहीं किया.

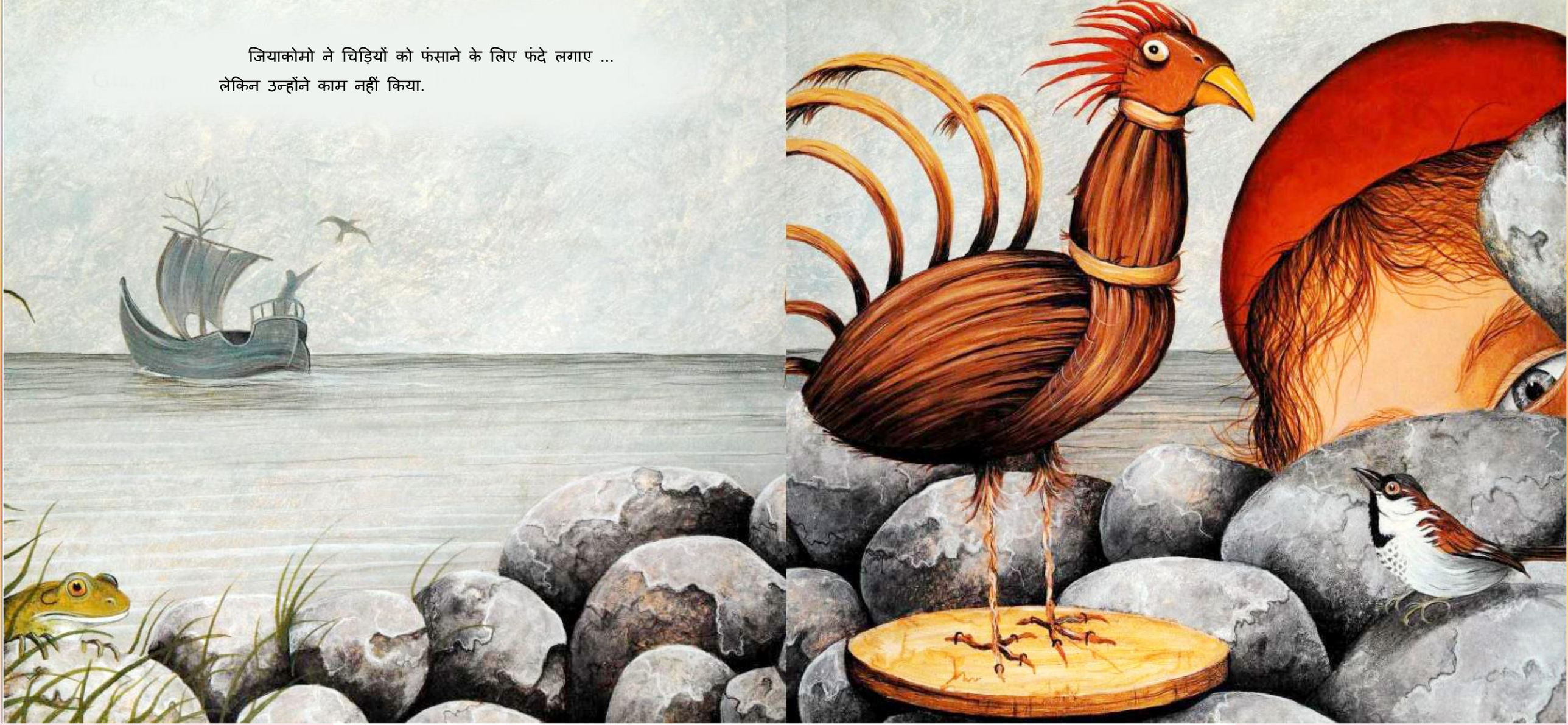

उसके जालों में भी कुछ नहीं फंसा था...

... उसके सारे जाल खाली थे.

जियाकोमो ने पूरे दिन काम किया.
उसने अपनी भरसक कोशिश की.

लेकिन उसे कहीं भी लाल पूंछ वाली चील नहीं मिली.

शाम ढलते ही, तब सभी चिड़िए नदारद हो गईं.

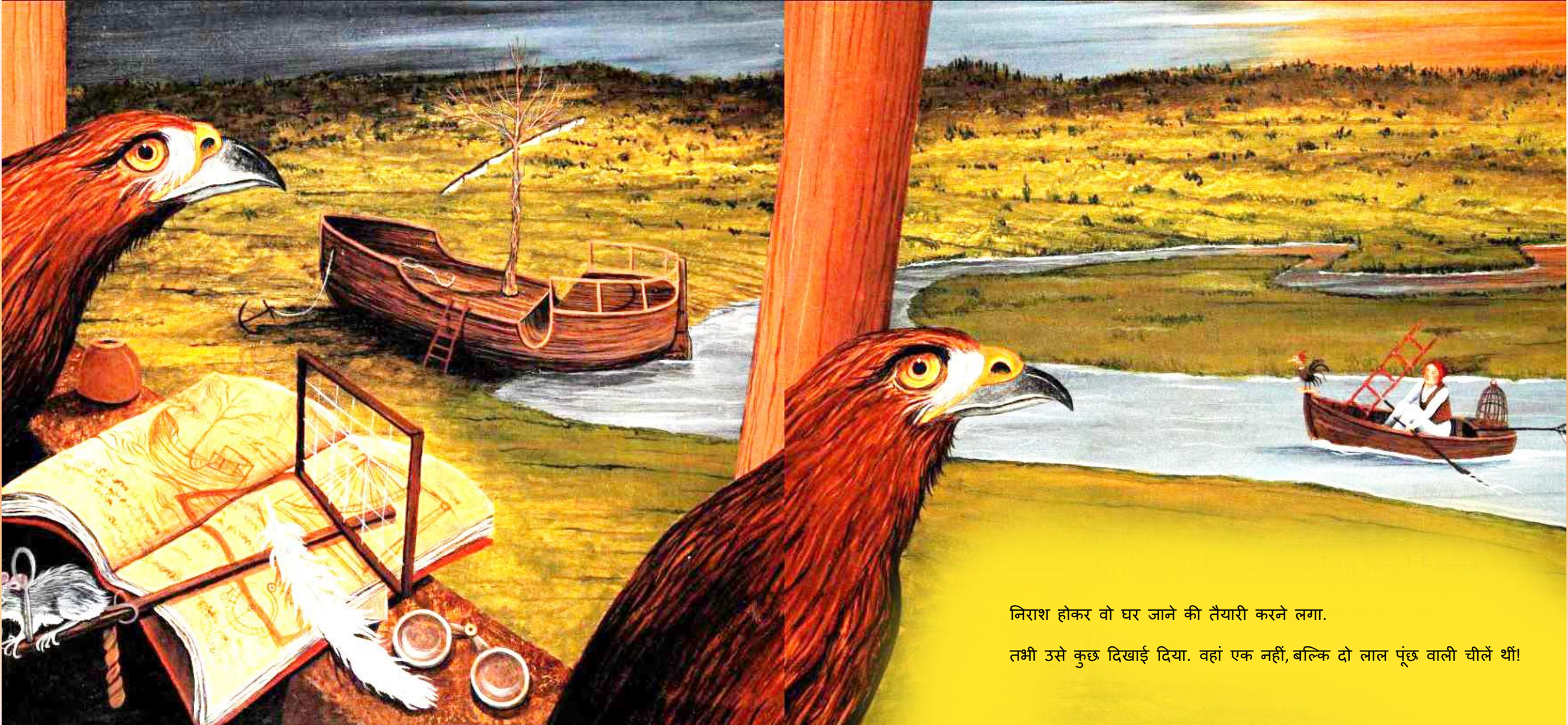

निराश होकर वो घर जाने की तैयारी करने लगा.

तभी उसे कुछ दिखाई दिया. वहां एक नहीं, बल्कि दो लाल पूंछ वाली चीलें थीं!

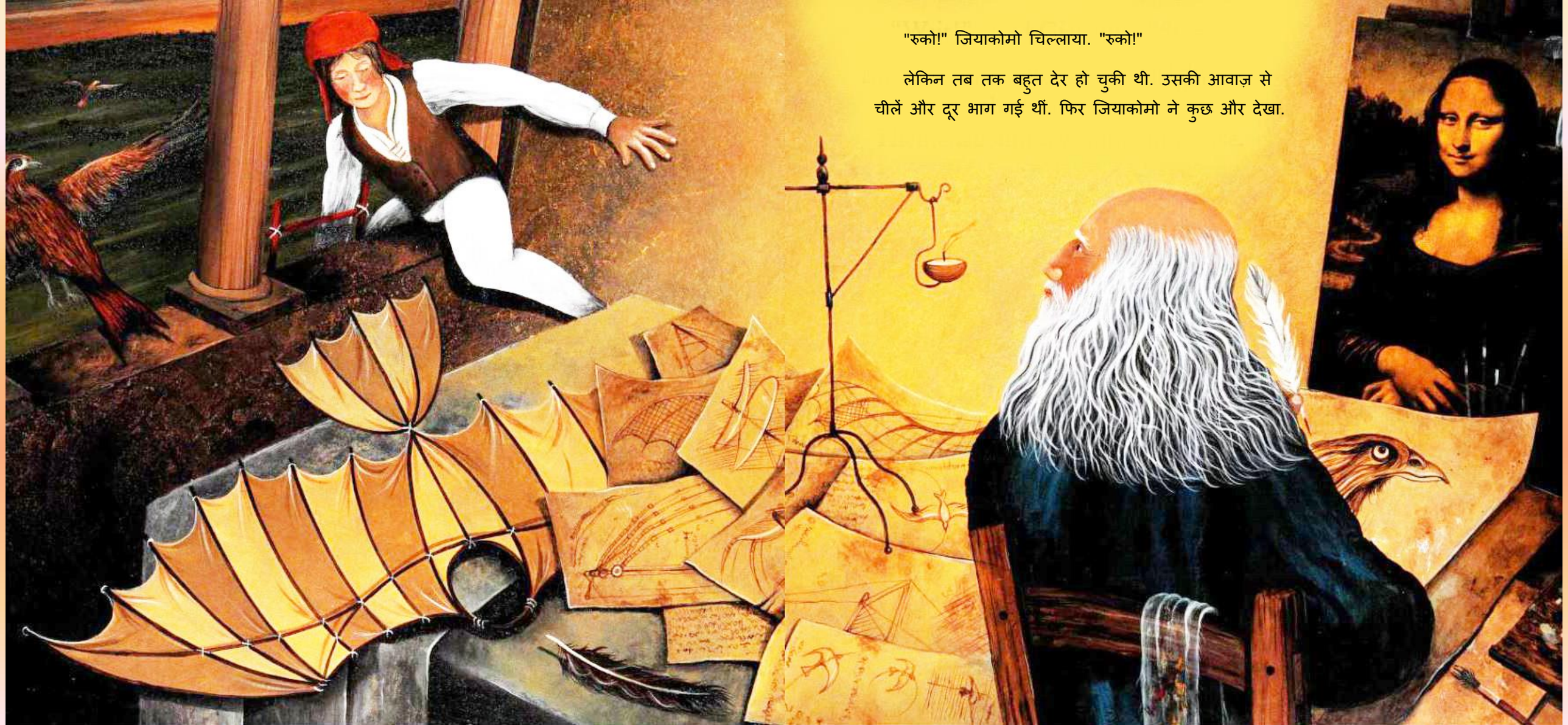

"रुको!" जियाकोमो चिल्लाया. "रुको!"

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. उसकी आवाज़ से
चीलें और दूर भाग गई थीं. फिर जियाकोमो ने कुछ और देखा.

"यह चील किसकी है?" जियाकोमो ने उस बूढ़े आदमी से पूछा.

"तुम उसे ले सकते हो अगर वो तुम्हारे किसी काम आए तो," बूढ़े ने उत्तर दिया. "मैंने अपने पतंग को सबसे ऊंची मीनार से छोड़ा था, और वो एक पक्षी की तरह हवा में तैरी थी."

फिर जियाकोमो ने बूढ़े के साथ रात भर काम किया ...

जैसे ही सूरज उग रहा था वैसे ही
जियाकोमो ने महल में प्रवेश किया.

उसके हाथों में पूरे इटली की सबसे
बेहतरीन लाल पूंछ वाली पतंगनुमा चील थी.

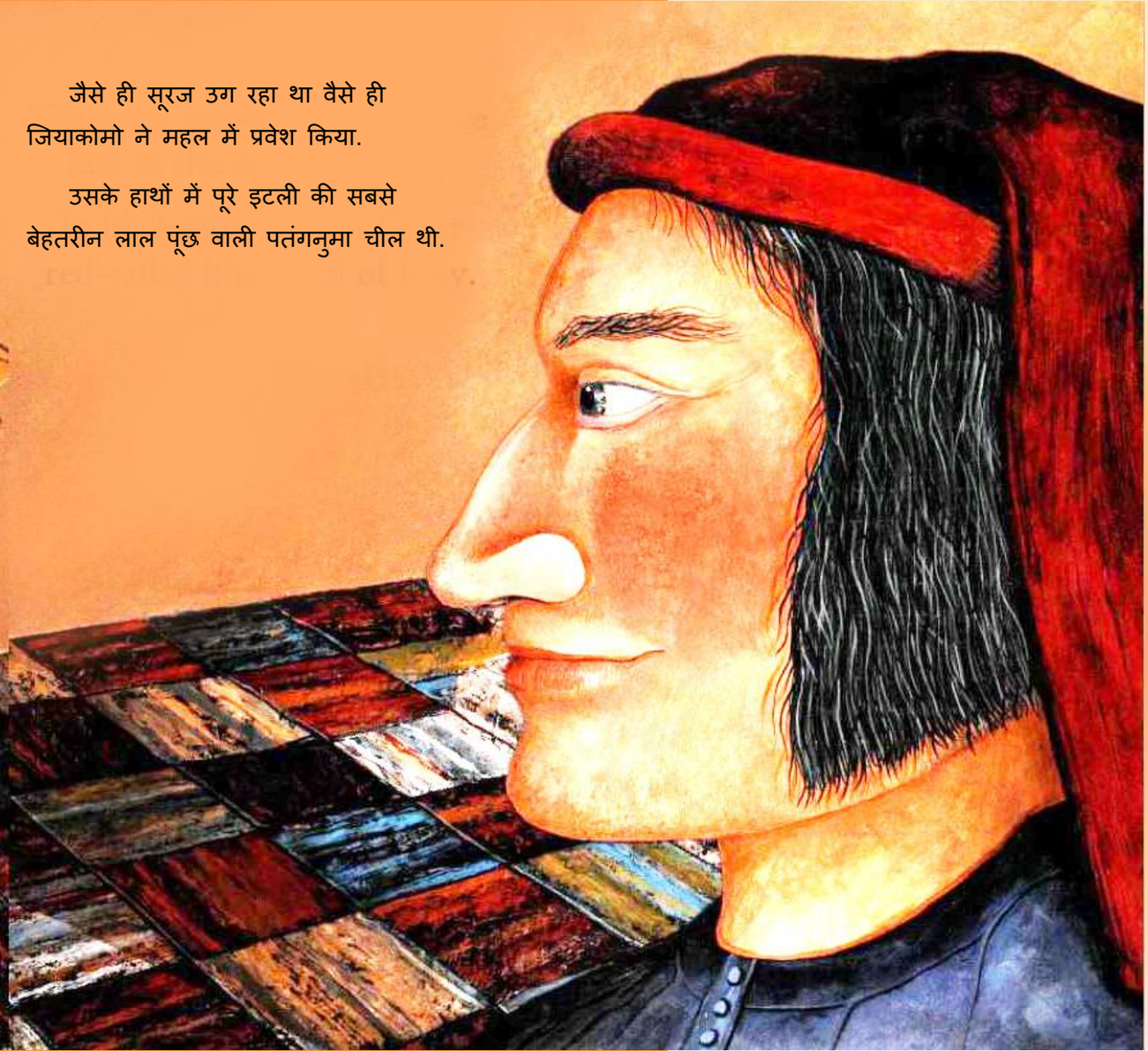

राजकुमार ने जियाकोमो को चांदी और सोने के सिक्कों से पुरस्कृत किया. राजकुमार जानता था कि वो पतंगनुमा चील कितनी कीमती थी - वो देख सकता था कि उस समय के सबसे महान जीवित कलाकार लियोनार्डो दा विंची ने उसे बनाया था.

उसके बाद जियाकोमो में मन में आखिर एक पक्षी पकड़ने वाला बनने की इच्छा पैदा हुई. लेकिन पक्षियों को पिंजरों और जालों में फँसाने के बजाए, अब वो लियोनार्डो का एक करीबी दोस्त बन गया और उसने पक्षियों की आकृतियों को कागज पर कैद करना सीखा.

लेखक का नोट

लियोनार्डो दा विंची का जन्म 1452 में इटली के विंची में हुआ था. वो एक वकील के बेटे थे. 1519 में फ्रांस के एंबोइस में उनकी मृत्यु हुई. किंवदंती के अनुसार, फ्रांस के राजा ने, लियोनार्डो की मृत्यु पर रोते हुए कहा कि "इस धरती पर आज तक कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं पैदा हुआ जो लियोनार्डो दा विंची जितना जानता हो."

कला, ड्राइंग, शरीर रचना और आविष्कारों के बारे में लियोनार्डो की डायरियों से हमें पता चलता है कि फ्रांस के राजा शायद बिल्कुल सही थे. लियोनार्डो दा विंची अपने समय के अन्य कलाकारों और अन्वेषकों से कई मायनों में सदियों आगे थे. दुर्भाग्य से, उनकी मृत्यु के बाद, उनकी डायरियां गायब हो गईं. अंत में सैकड़ों साल बाद, जब डायरियां मिलीं तब तक नवीन आविष्कारों ने अपना सिक्का जमा लिया था और लियोनार्डो के आविष्कारों को पीछे छोड़ दिया था. फिर भी, उनके अधिकांश विचार सही साबित हुए, और उनके सभी आविष्कारों ने काम किया होता अगर लोग उन्हें बनाने में सक्षम होते.

लियोनार्डो दा विंची के साहित्य और उनके काम के बारे में कई किताबें लिखी गई हैं. लेकिन जिस चीज में मुझे सबसे ज्यादा दिलचस्पी है वो है लियोनार्डो का उस लड़के से मिलना जो बाद में उनका करीबी दोस्त और साथी बन गया. वो पहली बार कैसे मिले इस के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है, सिवाए इसके कि वे 1491 में, सेंट मैरी मैग्डलीन के पर्व के दिन मिले थे, और तब वो लड़का दस साल का था. *उड़, चील, उड़* की कहानी उसी भेंट को दर्शाने का मेरा प्रयास है